यों कई गुनाह केते कहूं, सब ठौरों गई भूल।
कई देखाए गुन अपने, ताको तौल न मोल।।५२ ।।

इस तरह से मैं कितने गुनाह गिनाऊं? मुझसे सब जगह भूल हुई है और आपने कई तरह के एहसान किए जिनकी तौल और मोल नहीं हो सकती।

सो गुन देखे में नजरों, जिनको नहीं सुमार।
तो भी पेहेचान न हुई, न छूटी नींद विकार।।५३ ।।

आपके एहसानों को मैंने अपनी नजर से देखा है जो बेशुमार हैं। फिर भी मुझे आपकी पहचान नहीं हुई और न यह माया का विकार ही छूटा।

पीछे आप जुदे होए के, भेज दिया फुरमान।
सो पढ़्या मैं भली भांत सों, करी सब पेहेचान।।५४ ।।

फिर आप मुझसे अलग हो गए और मेरे पास कुरान भेज दिया। जिसे मैंने अच्छी तरह से पढ़ा और सब तरह की पहचान की।

सो कुंजी दई हाथ मेरे, कोई खोले न मुझ बिन।
सक्त नहीं त्रैलोक को, न कछू सक्त त्रैगुन।।५५ ।।

इस कुरान के छिपे भेदों के रहस्य को खोलने के लिए आपने तारतम की कुंजी मेरे हाथ में दी। जिन छिपे भेदों के रहस्यों को खोलने की ताकत त्रिदेव को नहीं है और न ही चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी और की शक्ति है उनको मेरे बिना कोई नहीं खोल सकता।

इन विध गुन केते कहूं, कई देखे मैं नजर।
मेरे हाथ खुलाए के, करी ब्रह्मांड में फजर।।५६ ।।

इस तरह से मैं आपके एहसान कहां तक कहूं जो मैंने अपनी नजर से देखे। अब कुरान के उन छिपे रहस्यों को मेरे हाथ से खुलवाकर ब्रह्माण्ड में फैले अज्ञान को मिटाकर ज्ञान का सवेरा कर दिया।

कई लिखी इसारतें अर्स की, कई रमूजें अनेक।
पेहेले पढ़ाई मुझ को, मैं ही खोलूं एही एक।।५७ ।।

कुरान में आपने घर (परमधाम) की कई बातों को इशारों में लिख रखा है। आपने पहले मुझे पढ़ाया। अब मैं ही एक ऐसी हूं जो उन छिपे भेदों के रहस्य को खोल दूंगी।

महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम।।५८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी की दी हुई 'मैं' (अहं) ने कुरान के छिपे रहस्य खोल दिए। इन खुदाई वचनों को चौदह लोक भी मिल जाएं तो मेरे सिवाय कोई दूसरा खोल नहीं सकता।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। २०९ ।।

रूहों को कुदरत देखाई हक ने

यों कई देखाई माया, और कई विध करी पेहेचान।
कई विध बदली मजलें, कई पुराए साख निसान।। १ ।।

इस तरह से धनी ने माया के अन्दर कई प्रकार के खेल दिखाए और कई तरह से पहचान कराई और कई तरह से मेरी हालतें बदलीं, अर्थात् पहले मेहराज ठाकुर, फिर इन्द्रावती, फिर महामति और फिर प्राणनाथ बनाया और धर्मशास्त्रों से कई तरह से गवाहियां दिलवाईं।

Nijanand App

हक की बातें अनेक हैं, कही न जाए या मुख।
इन झूठे खेल में बैठाए के, कई दिए कायम सुख।। २ ।।

धनी की बातें बहुत हैं जो इस मुख से कही नहीं जातीं। इस झूठे खेल में बिठाकर कई प्रकार के अखण्ड सुख दिए।

मैं पेहेले केहेनी कही, किया काम दुनी का सब।
पर एक फैल रेहेनीय का, लिया न सिर पर तब।। ३ ।।

मैं पहले लोगों के अनुसार कहनी में चली। दुनियां के सब काम किए, परन्तु रहनी का उस समय एक भी काम नहीं किया, अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के समय कहनी की रहनी नहीं आई।

अब आया बखत रेहेनीय का, रात मेट हुई फजर।
अब केहेनी रेहेनी हुआ चाहे, छोड़ दुनी ले अर्स नजर।। ४ ।।

अब हवसा से रहनी का समय आ गया और जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से अन्धकार मिटाकर सवेरा कर दिया। अब कहनी को रहनी में बदलना चाहिए और दुनियां को छोड़कर परमधाम में मगन होना चाहिए।

अब समया आया रेहेनीय का, रूह फैल को चाहे।
जो होवे असल अर्स की, सो फैल ले हाल देखाए।। ५ ।।

अब रहनी का समय आया है। अब मेरी आत्मा उसी रहनी के अनुसार करनी करना चाहती है। जो परमधाम की असल आत्मा होगी, वह करनी करके रहनी में आ जाएगी।

केहेनी कही सब रात में, आया फैल हाल का रोज।
हक अर्स नजर में लेय के, उड़ाए देओ दुनी बोझ।। ६ ।।

अज्ञान की दशा में सब बातें कहीं। अब जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान का सवेरा हो जाने से करनी और रहनी का समय आ गया है। अब अपनी नजर को धनी के चरणों में लगाकर संसार से अलग हो जाओ।

जो हकें केहेलाया सो कह्या, इत मैं बीच कहूं नाहें।
फैल हाल सब हक के, हकें सक मेटी दिल माहें।। ७ ।।

जो श्री राजजी महाराज ने कहलवाया, उसे मैंने कहा। यहां मेरी 'मैं' (अहं) का कोई स्थान नहीं है। अब करनी और रहनी श्री राजजी के हाथ में है। अब श्री राजजी महाराज ने मेरे दिल के सब संशय मिटा दिए हैं।

इलम दिया हकें अपना, और दई असल अकल।
जोस इस्क सब हक के, सब उमत करी निरमल।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपना इलम दिया और जागृत बुद्धि दी। अपना जोश और इश्क दिया, जिससे मैंने सब मोमिनों को निर्मल कर दिया।

इन जड़ थें तब मैं निकसी, जब आकीन दिया आप।
सकें सारी भान के, तुम साहेब किया मिलाप।। ९ ।।

जब श्री राजजी महाराज ने यकीन दिलाया तब मैं इस माया के ब्रह्माण्ड से निकल सकी और सारे संशय मिटाकर आपसे मिल सकी।

Nijanand App

ए मैं काढ़ी तुम इन विध, इन मैं में न आवे सक।
यों काढ़ी खुदी मैं साथ की, हकें किए आप माफक।। १० ।।

इस तरह से आपने मेरी 'मैं' (अहं) को मिटा दिया। अब इस मेरी 'मैं' (अहं) में कोई संशय नहीं है। इसी प्रकार से सुन्दरसाथ की 'मैं' (अहं) को हटाकर आपने अपने जैसा बना लिया।

हुकमें हाथ पकड़ के, दिया फैल हाल बेसक।
तब जोस इस्क देखाया, जासों पाया हक।। ११ ।।

आपके हुकम ने हाथ पकड़ कर अखण्ड की करनी रहनी दी। तब उस करनी और रहनी ने जोश और इश्क को दिखाया जिससे आप मिले।

जोस हाल और इस्क, ए आवे न फैल हाल बिन।
सो फैल हाल हक के, बिना बकसीस न पाया किन।। १२ ।।

आपका जोश और इश्क करनी और रहनी के बिना नहीं आ सकता। वह करनी और रहनी धनी की मेहर के बिना किसी को बख्शीश में नहीं मिली।

कलाम हक जुबान के, तिनका कहूं विवेक।
इन केहेनी से कायम हुए, दुनी पाया हक एक।। १३ ।।

कुरान की बातों की हकीकत मैं बताती हूं। इन वचनों के जाहिर करने से दुनियां को एक पारब्रह्म की पहचान मिली और अखण्ड मुक्ति मिली।

जिन केहेनी किल्लीय से, खुल्या भिस्त का द्वार।
सो केहेनी छुड़ाई हुकमें, दे फैल रेहेनी सार।। १४ ।।

जिस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से बहिश्त के दरवाजे खुले वह कहनी अब हक के हुकम ने रहनी का सार बताकर छुड़ा दी, अर्थात् कहनी को रहनी में बदल दिया।

ए जो केहेनी इन भांत की, किए कायम चौदे तबक।
सो छुड़ाई केहेनीय को, जासों पाया दुनियां हक।। १५ ।।

यह कुरान के वचन इस तरह के थे जिनसे चौदह लोकों को अखण्ड मुक्ति मिली। अब उस कुरान को छुड़ाया और ऐसा जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया जिससे दुनियां को पारब्रह्म की पहचान हुई।

कहे हुकम आगे रेहेनीय के, केहेनी कछुए नाहें।
जोस इस्क हक मिलावहीं, सो फैल हाल के माहें।। १६ ।।

हुकम कहता है कि रहनी के आगे कहनी कुछ नहीं है। जोश और इश्क पारब्रह्म से मिलाता है। वह रहनी से आता है।

दुनियां केहेनी केहेत है, सो डूबत मैं सागर।
मैं लेहेरें मेर समान में, कोई निकस न पावे बका घर।। १७ ।।

दुनियां वाले जो ग्रन्थों का ज्ञान कहते हैं, वह अहंकार के सागर में डूबे होते हैं। उनके अन्दर पहाड़ के समान अहंकार की लहरें चलती हैं। इनसे निकलकर कोई भी परमधाम को प्राप्त नहीं कर सकता।

Nijanand App

ए खेल मोहोरे कथ कथ गए, सो जले खुदी बेखबर।
आप लेहेरें माहें अपनी, गोते खात फेर फेर।। १८ ।।

इस संसार के त्रिदेव कह-कहकर थक गए। वह भी अपनी 'मैं' (अहंकार) में जल गए और अपने ही अहंकार में बार-बार गोते खाते रहे।

ओही उनों का किबला, छोड़ें नाहीं ख्याल।
मैं मैं करत मरत नहीं, इनके एही फैल हाल।। १९ ।।

वही उनका अपना अहं ही उनका खुदा है जिसको अपने दिल से नहीं निकालते। सदा 'मैं मैं' करने वालों का अहंकार कभी खत्म नहीं होता। उनकी करनी और रहनी यही है।

अब कैसी मैं बीच खेल के, जो खेलत कबूतर।
ए जो नाबूद कछुए नहीं, तो मैं केहेत क्यों कर।। २० ।।

अब खेल के बीच में उनकी 'मैं' का अहंकार ऐसा है जैसे खेल के कबूतर और जो मिट जाने वाले जीव कुछ भी नहीं हैं वह अपने आपको 'मैं' कैसे कह सकते हैं।

खेल किया तुम वास्ते, जो देखत बैठे वतन।
सो देख के उड़ावसी, जिन विध झूठ सुपन।। २१ ।।

हे मोमिनो! यह खेल तुम्हारे वास्ते किया है जो तुम परमधाम में बैठे देख रहे हो। जिस तरह से झूठा सपना उड़ जाता है उसी तरह यह खेल भी उड़ जाएगा।

जो रूहें होए अर्स की, सो तो तले हुकम।
जानत त्यों खेलावत, ऊपर बैठ खसम।। २२ ।।

जो परमधाम की रूहें हैं वह श्री राजजी के हुकम के अधीन हैं। उन्हें परमधाम में बैठकर श्री राजजी महाराज जैसा चाहते हैं उसी तरह हुकम के द्वारा मोमिनों को खेल खिलाते हैं।

इन में भी मैं है नहीं, जो ए समझें मूल इलम।
फैल हाल इस्क लेवहीं, तब हक की मैं आतम।। २३ ।।

जो इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी को समझ लेगा उसके अन्दर की 'मैं' समाप्त हो जाएगी। वह अपनी करनी और रहनी से इश्क लेगी। तभी उनके अन्दर परमधाम की अंगना होने का भाव होगा।

तब गुनाह कछू ना लगे, जो कीजे ऐसी चाल।
सो सुकन पेहेले कहे, जो कोई बदले हाल।। २४ ।।

यदि रहनी से जोश और इश्क लेकर चले तो गुनाह नहीं लगेगा। आत्मा की हालत ही बदल जाएगी। यह मैंने पहले ही कह दिया है।

इन विध मैं मरत है, बैठे तले कदम।
जोस इस्क आवे हाल में, लेय के हक इलम।। २५ ।।

इस तरह से संसार की 'मैं' (अहं) मिटाकर श्री राजजी के चरणों के तले बैठी हूं, का भाव आता है। श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से जोश और इश्क रहनी में बदल जाता है।

Nijanand App

जो सुध मलकूत में नहीं, ना सुध नूर वतन।
सो गिरो दिल पूरन भई, मैं काढ़ी बकसीस इन।। २६ ।।

जिस बात की खबर बैकुण्ठनाथ विष्णु को नहीं है और अक्षर ब्रह्म को नहीं है, वह अब इस झूठे संसार में मोमिनों के दिलों में तारतम वाणी की कृपा से 'मैं' (अहं) को निकालने की सुध धनी की बख्शीश से आ गई है।

इन मैं को हक बिना, कबहूं न काढ़ी जाए।
सो मुझ पर मेहेर हकें करी, मैं जरे को देत उड़ाए।। २७ ।।

इस 'मैं' (अहं) को श्री राजजी की मेहर के बिना कोई कभी निकाल नहीं सकता। वह मेहर श्री राजजी की मेरे ऊपर हो गई है और मैं उस 'मैं' (अहं) को जड़ (मूल) से समाप्त कर देती हूं।

ना तो ए मैं ऐसी नहीं, जो निकसे किए उपाए।
मेहेनत कर त्रिगुन थके, कोई सके न मैं को फिराए।। २८ ।।

नहीं तो यह 'मैं' (अहं) ऐसी नहीं है कि आराम से निकल जाए। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर भी इसको निकालने के लिए थक गए, किन्तु कोई भी संसार की 'मैं' (अहं) को हटा नहीं सका।

ए दुनियां चौदे तबक में, किन जान्यो न मैं को बल।
किन मैं को पार न पाइया, कई दौड़ाए थके अकल।। २९ ।।

चौदह तबकों की दुनियां में किसी ने 'मैं' (अहं) को नहीं पहचाना और न उसका पार ही पाया। सब अपनी-अपनी अक्ल दौड़ाकर थक गए।

इन मैं में डूब्या सब कोई, याको पार न पावे कोए।
याको पार सो पावहीं, जाको मुतलक बकसीस होए।। ३० ।।

इस 'मैं' (अहं) में सभी कोई डूबे हैं। इसका पार किसी ने नहीं पाया। इसका पार वही पाएंगे जिन्हें पारब्रह्म की मेहर की बख्शीश हो जाएगी।

ए बानी मैं मारेय की, सुनी होए मोमिन।
दुनी तरफ की जीवती, कबहूं न रेहेवे इन।। ३१ ।।

यह 'मैं' (अहं) को मारने का तरीका यदि मोमिनों ने सुन लिया हो तो उनकी दुनियां की 'मैं' (अहं) उड़ जाएगी और फिर कभी उनके अन्दर नहीं आएगी।

ए मैं इन गिरोह की, काढ़ें एक धनी धाम।
ए मरे पेड़ से हुकमें, ले साहेब के कलाम।। ३२ ।।

ब्रह्मसृष्टि की झूठी 'मैं' (अहं) को श्री राजजी महाराज ही निकालेंगे और उनकी जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से हुकम के द्वारा यह 'मैं' (अहं) जड़ से ही खत्म हो जाएगी।

इलम खुदाई लदुन्नी, बकसीस असल रोसन।
जोस इस्क ले बंदगी, निसबत असल वतन।। ३३ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी की बख्शीश ऐसी है जिससे जोश और इश्क की बन्दगी लेकर परमधाम की असल निसबत की पहचान होती है।

Nijanand App

अब यों हक को याद कर, ले हुकम सिर चढ़ाए।
ए हक बिना मैं दुनीय की, सो सब मैं देऊं उड़ाए।। ३४ ।।

अब इस तरह से श्री राजजी महाराज के हुकम को सिर पर धारण करके श्री राजजी की 'मैं' (अहं) के अतिरिक्त दुनियां की 'मैं' (अहं) को मैं उड़ा दूंगी।

इत मैं नेक न आवहीं, खड़े हुकम तले जे।
ए मैं हक की मेहेर लेय के, कर निसंक हिदायत ए।। ३५ ।।

अब जो मोमिन श्री राजजी महाराज के हुकम के अनुसार चलेंगे उनके अन्दर संसार की 'मैं' (अहं) नाम मात्र को भी नहीं आएगी। यह 'मैं' (अहं) हक की मेहर लेकर हक के हुकम से खड़ी है, अर्थात् जागृत होने पर भी मेरा तन श्री राजजी के हुकम से खड़ा है।

ए सुनियो खास उमत, इन मैं को काढ़ो जड़ मूल।
ले साहेदी लदुन्नीय से, कौल ईसा इमाम रसूल।। ३६ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! सुनो, जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से ईसा (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज), इमाम मेंहदी-श्री प्राणनाथजी महाराज और रसूल साहब के वचनों की गवाही लेकर संसार की 'मैं' (अहं) को जड़ (मूल) से निकाल दो।

हकें किया हुकम वतन में, सो उपजत अंग असल।
जैसा देखत सुपन में, ए जो बरतत इत नकल।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज परमधाम में जो हुकम करते हैं वह हमारी मूल परआतम में आ जाते हैं और हमारी मूल परआतम जो सपना देख रही है उसकी नकल यह हमारा संसार का तन उसी अनुसार कर्म करता है।

ए करो तेहेकीक विचार के, जो होए अर्स उमत।
यों असल में हक जगावत, तैसा बदलत बखत।। ३८ ।।

जो कोई परमधाम की ब्रह्मसृष्टि है वह विचार कर यह निश्चित कर ले कि परमधाम में श्री राजजी महाराज जितना हमारी परआतम को जगाते हैं उतना ही हमारे इस झूठे तन में रहनी आती है।

कहे लदुन्नी भोम तलेय की, हक बैठे खेलावत।
तैसा इत होता गया, जैसा हजूर हुकम करत।। ३९ ।।

जागृत बुद्धि की तारतम वाणी कहती है कि तले की भूमिका मूल-मिलावे में श्री राजजी महाराज बैठकर खेल दिखला रहे हैं। जैसा मूल-मिलावे में हुकम करते हैं वैसा ही हमारा यह संसारी तन कर्म करता है।

मोहे दिया लदुन्नी रूहअल्ला, सो मैं कह्या बेवरा कर।
ए किया उमत कारने, जो विचारो दिल धर।। ४० ।।

मुझे श्यामा महारानी ने तारतम ज्ञान दिया। उसका मैंने ब्यौरा करके तुम्हें कहा है। यह मैंने सुन्दरसाथ के वास्ते किया है जिसको अपने दिल में विचार करके देखो।

ए रसूल अर्स अजीम से, ले आया फुरमान।
मैं जो कह्या तुमें लदुन्नी, सो जोड़ देखो निसान।। ४१ ।।

रसूल साहब परमधाम से कुरान लेकर आए हैं। मैंने जागृत बुद्धि की तारतम वाणी दी है। उससे निशान मिलाकर देखो।

Nijanand App

कहे विध विध की साहेदी, या फुरमान या हदीस।
और भेजे नामे वसीयत, सो गिरो पर बकसीस।। ४२ ।।

और तरह-तरह से कुरान और हदीसों ने गवाहियां दीं और वसीयतनामे भिजवाए। यह मोमिनों के लिए धनी की बख्शीश है।

इत तीन सूरत आए मिली, भांत भांत साहेदी ले।
सो लगाए देखो तुम रूह सों, ए इलम लदुन्नी जे।। ४३ ।।

यहां अब तीनों सूरतें (बसरी, मल्की और हकी) तरह-तरह की गवाहियां लेकर आई हैं। तारतम वाणी को लेकर अपनी आत्मा से पहचान करके देखो!

एह करत सब हुकम, ले अव्वल से आखिर।
इत मैं बीच काहू में नहीं, मैं ल्यावे सो काफर।। ४४ ।।

अव्वल से आखिर तक यह सब हुकम कर रहा है। यहां मेरी 'मैं' (अहं) कहीं नहीं है। जो 'मैं' (अहं) लावे वही काफिर है।

विचार देखो इसदाए से, ले अपना तारतम।
अपन सोवत हैं नीद में, खेल खेलावत खसम।। ४५ ।।

अपनी तारतम वाणी से मूल से ही विचार करके देखो। हम तो नींद में सोए हैं और यह सब खेल श्री राजजी दिखा रहे हैं।

ए जो सूते तुम देखत हो, खसम देखावत ख्याल।
सो अब हीं देत उड़ाए के, होसी हांसी बड़ी खुसाल।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज खेल दिखा रहे हैं और तुम वही खेल सोकर देख रहे हो। तुम्हारी इस नींद को श्री राजजी तुरन्त उड़ा देंगे और उठने पर घर में बड़ी आनन्दमयी हंसी होगी।

अब मैं काहू में नहीं, ए जो लेत सिर मैं।
ए हांसी होसी ज्यों कर, जो करत हैं मैं तैं।। ४७ ।।

अब 'मैं' (अहं) किसी में भी नहीं रह गयी। जो अपने सिर पर 'मैं' (अहं) लेते हैं इस बात की हांसी उन पर होगी जो 'मैं और तुम' के चक्कर में हैं।

ताथें जो मैं हक की, रहत तले हुकम।
मैं दुनी की मार के, रही देख खेल खसम।। ४८ ।।

इसलिए श्री राजजी महाराज की 'मैं' (अहं) हुकम के तले रहती है, इसलिए मैं भी दुनियां की 'मैं' (अहं) को मारकर खसम का खेल देख रही हूं।

ताथें मैं इन धनी की, करत हक का काम।
ए खेल खुसाली लेय के, जाग बैठे इत धाम।। ४९ ।।

इसलिए यह धनी की 'मैं' (अहं) ही श्री राजजी महाराज का सारा काम कर रही है। इस खेल का आनन्द लेकर परमधाम में हम अपनी परआतम में जागेंगे।

Nijanand App

ए सब लेवे रोसनी, पेहेचान के निसबत।
ए मैं बका हक की, करे हिदायत महामत।।५० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम के मोमिन हैं वह अपने आप को अंगना समझकर तारतम वाणी से पहचान करें। यह अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज की 'मैं' (अहं) ही मेरे अन्दर बैठकर समझा रही है।

॥ प्रकरण ॥ ५ ॥ चौपाई ॥ २५९ ॥

पंच रोसनी का मंगला चरन

गैब बातें मेहेबूब की, बीच बका खिलवत।
हकें भेजी मुझ ऊपर, रूह-अल्ला ल्याए न्यामत।। १ ।।

अखण्ड परमधाम के अन्दर श्री राजजी महाराज और मूल-मिलावा की जो हकीकत छिपी थी। श्री राजजी महाराज ने वह सब रूहअल्लाह (श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी) के द्वारा मुझ पर भेजी।

रूह-अल्ला आया रूहन पर, उतर चौथे आसमान।
सब सुध लाहूती ल्याइया, जो लिख्या बीच फुरमान।। २ ।।

श्यामा महारानी चौथे आसमान (लाहूत परमधाम) से रूहों के वास्ते उतर कर आई हैं। कुरान में जैसा लिखा था, वह परमधाम की सब हकीकत लेकर आई हैं।

इलम लदुन्नी हक का, कुंजी बका की जे।
मेहेर करी मुझ ऊपर, खोल दिए पट ए।। ३ ।।

श्री राजजी की जागृत बुद्धि की तारतम वाणी ही अखण्ड घर की कुंजी है। जिसे मेहर करके मेरे पास भेजा और घर के बन्द दरवाजे खोल दिए।

मोसों मिलाप कर कह्या, मैं आया रूहन पर।
अरवाहें जेती अर्स की, तिन बुलावन खातिर।। ४ ।।

मुझसे श्री राजजी महाराज ने मिलकर कहा कि परमधाम की जितनी भी रूहें हैं, मैं उनको बुलाने के लिए आया हूं।

मोहे कह्या तेरी रूह, आई अर्स अजीम सों।
कुंजी देत हों तुझको, पट खोल दे सब को।। ५ ।।

मुझे कहा कि तेरी रूह अखण्ड परमधाम से खेल में उतर कर आई है, मैं तुमको तारतम वाणी की कुंजी देता हूं। तुम सबकी अज्ञानता हटाकर परमधाम का ज्ञान दे दो।

न्यामत ल्याए सब रात में, लैलत-कदर के माहें।
बुलाए ल्याओ रूहें फजर को, वतन कायम है जांहें।। ६ ।।

यह अखण्ड न्यामत लैल तुल कदर की रात्रि में लाए और कहा कि तारतम वाणी से उजाला करके, अर्थात् अन्धकार हटाकर सवेरे रूहों को बुलाकर अखण्ड घर ले आओ।

अर्स चौदे तबकों, नजर न आवत किन।
सो सेहेरग से नजीक, देखाया बका वतन।। ७ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में अखण्ड घर किसी को दिखाई नहीं देता। अब वह तारतम वाणी के ज्ञान से प्राण नली (सेहेरग) से भी नजदीक है, दिखा दिया।

Nijanand App